International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान शिक्षा में योगदान

➢ डॉ विकास कुमार,असिस्टेंट प्रोफेसर, हिमालयन गढ़वाल यूनिवर्सिटी, उत्तराखंड

सार–
स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन दर्शन तथा शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में उन्होनें अपने विचारों से क्रान्ति ला दी थी। जो समाज द्रुत गति से इसाई मिशनरियों के प्रभाव मे आ रहा था, उसे वैदिक संस्कृति के गौरव से परिचित कराकर उन्होनें प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का पुनुरूत्थान किया। प्रस्तुत प्रपत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान शिक्षा में योगदान पर चर्चा की गई है। हम विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक सम्पन्न राष्ट्र में निवास कर रहे है। पूर्वकालिक से लेकर आज तक हमारी संस्कृति और मूल्य परम्परा सम्पन्न बनी हुई है। परन्तु वर्तमान समय में मूल्य सम्पन्नता और संस्कारों के स्थानान्तरण में परिवर्तन आया है। इसलिए आने वाले समय में अनेक समस्याएँ आयेंगी जिसका मूल कारण शैक्षिक विचारों का सामाजिक शक्तिकरण है।

प्रस्तावना–
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने शिक्षा के क्षेत्र में अपने सिद्धान्तों को गति देते हुए अपने जीवनकाल में सर्वप्रथम उन्होने संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। सबसे पहले इन्होंने काशी, कासगंज (जिलाएटा), छलेसर (जिला–अलीगढ़), फर्रूखाबाद तथा मिर्जापुर जिलों में ऐसी पाठशालाओं की स्थापना की, जिसमे छात्रों को निशुल्क पुस्तकें, खाना, कपडे, निःशुल्क दिये जाते थे। इनकी देखरेख के लिए स्वामी जी ने अपने सहयोगियों को निगरानी रखने के लिए कहा।
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का प्रमुख उद्देश्य था कि शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण भी होना चाहिए। स्वकिताबों का चुनाव करते हुए समय विशेष की पहचान करना क्योंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है। स्वामी जी की मान्यता थी कि विद्यार्थियों को संस्कृत व मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का अध्ययन भी करवाना था। शास्त्र शिक्षण के साथ–साथ छात्रों को कला कौशल का भी ज्ञान देना चाहिए ताकि भावी जीवन में अपना जीवकोपार्जन कर सकें।
स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बालक और बालिकाओं की शिक्षा पर बराबर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दोनों में अन्तर करना हमारी शिक्षा को शोभनीय नहीं होता है। स्वामी जी की मान्यता थी कि वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य केवल मानव को आजीविका के योग्य बनाना था। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के योग्य बनाया जाय ताकि शरीर के अन्दर विद्यमान शक्तियों का विकास करना भी महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

जीवन परिचय–
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 12 फरवरी टंकारा में सन 1824 में मोरबी के पास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

गुजरात के काठियावाड क्षेत्र जिला–राजकेट में हुआ था। उनके पिता जी का नाम करशन जी लाल तिवारी तथा माँ का नाम यशोदा बाई था। उनके पिता जी एक कलैक्टर (कर लेने वाले) तथा ब्राह्मण परिवार के समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इनका मूल शंकर नाम इसलिए पड़ा की उसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। दयानन्द सरस्वती जी बचपन से ही बडे मेधावी व विद्वान थे। उन्होंने दो बर्ष की अवस्था में गायत्री मंत्र का शुद्ध उच्चारण करना सीख लिया था। वे बचपन से पारिवारिक कारण से शिव भक्ति के परम पुजारी थे। इनकी संस्कृत पढने में बचपन से ही रुचि थी। 14 वर्ष की आयु तक मूल शंकर ने सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण, सामवेद और यजुर्वेद का अध्ययन कर लिया था। मथुरा के स्वामी विरजा नंद महाराज इनके गुरु थे। शिक्षा गृहण करके गुरु की आज्ञा मानकर अखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। उन्होंने 12 जून 1875 को सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक की रचना उदयपुर में की। इन्होने 10 अप्रैल 1875 को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी सरस्वती जी की मृत्यु उनके ही सहायक रसोइये ने स्वामी सरस्वती जी के दूध में काँच पीस कर मिला दिये थे जिससे स्वामी जी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को हो गई।

सभी वर्गों के लिए अनिवार्य शिक्षा–

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सभी वर्ग के बालक–बालिकाओं के लिए शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रत्येक माता–पिता का अपना दायित्व होता है। स्वामी जी की मान्यता थी कि जिन माता–पिता ने अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान नहीं की वे माता–पिता अपने बच्चों के शत्रु के समान थे। स्वामी जी का मत था कि स्त्री अपने घर की शिक्षित होगी तभी वह अपने गृहस्थ को ठीक प्रकार से चला सकती है। क्योंकि स्त्री पुरुष रथ के दोपहियों की तरह होते है। जिस प्रकार एक रथ के पहिए की कोई कीमत नहीं होती, उसी प्रकार एक दूजे के बिना समाज में हमारी कोई कीमत नहीं होती है।

स्वामी सरस्वती जी चाहते थे कि स्त्री शिक्षा में गृहस्थी सम्बन्धी कुछ अध्ययन बिन्दुओं का ज्ञान प्रदान कराया जाय जिससे वह अपने गृहस्थी जीवन को अच्छे से चला सकें। स्वामी जी की मान्यता थी कि यदि हरिजन शिक्षा प्राप्त करके उच्च स्थान को ग्रहण कर ले तो वह ब्राह्मण के समान पूजनीय हो जाता है। विद्या के प्रचार–प्रसार हेतु दयानन्द सरस्वती जी ने अपने सहपाठी लाला हंसराज को प्रेरणा दी और उनकी प्रेरणा से हंसराज जी ने लाहौर में सन1886 मे दयानन्द एग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 1901 मे हरिद्वार के पास काँगड़ी में'गुरुकुल' की स्थापना की।

समाजिक क्षेत्र में सुधार व शैक्षिक सुधार–

(क) स्त्री शिक्षा पर बल–समाज की उन्नति का विचार करते हुए, स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। क्योंकि उस समय स्त्री शिक्षा पर किसी का भी ध्यान नही था। नारी पूर्णतया घर की चारदीवारी में हमेशा के लिए कैद रखी जाती थी। उससे छुटकारा पाने के लिए उन्होने अपना पूरा योगदान दिया था।

(ख) छुआछूत का विरोध–स्वामी दयानन्द जी ने समाज की शिक्षा का स्तर देखा कि कुछ लोग

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ही शिक्षित है। इसी के अभाव में ऊँच–नीच का भेदभाव किया जा रहा है। उनकी मान्यता थी कि सभी वर्गों का समाज में समान ही अधिकार होना चाहिए।

(ग) विधवा विवाह को मान्यता–स्वामी दयानन्द जी समाज में व्याप्त विधवा विवाह का सामाना करते हुए लोगों को देखा कि पुनःविवाह करना समाज में पूर्ण रूपेण निषिद्ध था। क्योंकि उस समय बाल विवाह अधिक हुआ करते थे जिसके कारण कभी किसी दुर्घटना के बाद पति छोटी सी उम्र में ही खत्म/जीवन लीला समाप्त हो जाती है तो नारी को सम्पूर्ण जीवन को सफेद साडी मे ंचारदीवारी के अन्दर काटनी पड ़जाती है। इसलिए बच्चियों को भी उच्च शिक्षा प्रदान करके उनके जीवन को सुधारा व संभाला जा सकता है।

(घ) कन्या वध का विरोध करना–अक्सर कर उस समय कुछ कुलीन लोग व राजा महाराजा बेटी को जन्म होना अपसकुन व अपनी इज्जत नीची मानते थे तथा कन्या का वध उन दुष्टो के द्वारा कर दिया जाता था। स्वामी दयानन्द जी के कारण ही राजस्थान के कोटा राजपूत सियासत की कन्या वध कुप्रथा को रोका गया था। उसे कानूनी रूप से अपराध घोषित किया।

(ड) अवकाश का सदुपयोग करना– स्वामी जी की मान्यता थी कि बच्चों के अवकाश का सही प्रयोग करना मात–पिता का परम उददेश्य होना चाहिए जिससे बच्चे अनर्गल रास्ते पर न जा सकें। क्योंकि बालक अकेले में भी अपना समय व्यतीत करता है तो वह एकांकी महसूस करके अनर्गल रास्ते भी अपना सकता है।

(च) ब्रह्मचर्य पर विशेष बल– स्वामी दयानन्द जी ब्रह्मचर्य के पालन पर बचपन से ही ध्यान देते की वकालत करते है। क्योंकि शिक्षा अध्ययन करते समय जो बालक ब्रहमचर्य का पालन कर लेता है। वह उस महान तेजस्वी पुरुष के समान ईश्वर के समान पूजता है। क्योंकि बालक ब्रह्मचर्य के पालन करने से ही जीवन मे अच्छी सफलता को प्राप्त करता है।

(छ) मूर्ती पूजा का विरोध– स्वामी दयानंद सरस्वती जी हमारे भारत वासियों के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव जाति का मन, वचन, कर्म व धर्म से उत्थान चाहते थे। तभी कहा गया है कि मनसा वाचा कर्मणा धर्माथानाम् उत्थानम् उदिष्यति। मन्दिर मे ंधन–दौलत का दान न करके समाज मे ंकमजोर व गरीब लोगो ंकी मदद करें। भारतीय समाज का उत्थान जब हो सकता है मूर्ती पूजा के बजाय जनसेवा पर अधिक बल दिया जाय।

स्वामीदयानन्दसरस्वतीजी का शिक्षा में निम्नवतयोगदान है–

- स्वामी दयानन्द जी ने सार्वभौमिक शिक्षा का प्रतिपादन किया। उन्होने ंकहा कि माता–पिता तथा राज्य के लिए यह आवश्यक है कि सभी को अनिवार्य रूप से शिक्षित किया जाये ताकि स्वयं वे दो ंका अध्ययन कर उनके अनुकूल आचरण करें व दूसरो द्वारा दी गई व्याख्या को मानने के लिए बाध्य न हो।
- स्वामी दयानन्द जी ने मुक्ति को जीवन का अन्तिम लक्ष्य और चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य बताया, किन्तु मुक्ति से उनका तात्पर्य मुख्यतःपाप पूर्ण आचरण से मुक्त होना है। चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा द्वारा ईश्वरीय गुणो ंका विकास आवश्यक है। स्वाामी विवेकानंद जी ने सद्गुणों के विकास के लिये सत्संग आवश्यक बताया है। क्योंकि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सद्विचारों वाले व्यक्तियों से विचार–विमर्श करने से विवेक उत्पन्न होता है, जिससे उचित अनुचित का भेद ज्ञात होता है।

- स्वामी दयानन्द जीने नैतिक गुणों के विकास में षोड्श संस्कारों के महत्व को स्वीकारा है। उनका मत है कि शुभ संकल्पों के साथ संस्कार सम्पन्न करने से बालक स्वस्थ्य, बुद्विमान एवम् चरित्रवान होता है।
- स्वामी दयानन्द जी ने प्रारम्भिक शिक्षा में माता–पिता की भूमिका पर विशेष बल दिया है। उनका कहना है कि प्रारम्भिक अक्षर ज्ञान माँ द्वारा ही दिया जाना चाहिए। तदनन्तर पिता को एक आदर्श शिक्षक की भूमिका अदा करनी चाहिए। स्वामी जीने माता–पिता के आहार–विहार एवम् विचारों की शुद्वता पर भी बल दिया है तथा स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे सरल एवम् सादा जीवन बिताएँ ताकि बच्चे उनका अनुसरण कर सकें।
- स्वामी दयानन्द जी ने चरित्र निर्माण मे समय व परिस्थिति के अनुसार बालक को उचित दण्ड देने का समर्थन किया है। उनका कहना है कि दण्ड देने वाले का हृदय कोमल एवम् सहानुभूति पूर्ण होना चाहिए, किन्तु बालक को अनुशासित करने के लिए उसे ऊपर से कठोर होना आवश्यक है स्वामी जी ने पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों की खेल पद्वति की आलोचना की है उनके मतानुसार शिक्षा जैसा गंभीर कार्य खेल द्वारा सम्पन्न नही किया जा सकता।
- स्वामी दयानंद वैदिक संस्कृति के कट्टर समर्थक थे किन्तु उन्होनें वेदों की नई व्याख्या की तथा वेदों की शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करने हेतु नये गुरूकुलों की स्थापना की।
- स्वामी जी ने सभी वर्णो के व्यक्तियों के लिए वेदाध्ययन का अधिकार दया। किन्तु उन्होनें यह भी बताया कि वर्ण का निर्धारण जन्म से नही वरन् कर्म से होता है।
- स्वामी जी ने धर्म के रूढिवादी स्वरूप को त्याग कर परिष्कृत रूप में धार्मिक शिक्षा का अनुमोदन किया। उन्होनें अवतारवाद का खण्डन किया किन्तु ऋषियो के आदर्शो का आदर किया ? वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे तथा ज्योतिष पर विश्वास नहीं करते थे।
- स्वामी दयानंद जी ने अपनी शिक्षा पद्वति मे आदर्शवादी तथा यथार्थवादी विचारो समन्वय कर मनुष्यों को सर्वहितकारी जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- स्वामी दयानंद जी क्रान्तिकारी विचारक एवं समाज सुधारक थे। उन्होनें बाल विवाह का निषेध किया तथा विधवा विवाह को मान्यता दी।
- स्वामी जी ने अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा को बताया।

निष्कर्ष–

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त अनेकों कुरूतियों वरुढ़ियों और अंधविश्वासों से समाज को उनमुक्त करने का प्रयास किया। सरस्वती जी का सामाजिक आधुनिक शिक्षा पर अत्यन्त प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते है। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे जो आज समाज की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अंधविश्वासी परम्परा का खण्डन किया था वे शाश्वत सत्य पर विश्वास रखते जिसका आज समाज पर काफी प्रभाव व बदलाव देखने को आया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पुरुष व महिला व गरीब आदि की शिक्षा की वकालत करते है जो कि वर्तमान समय में स्पष्ट छल कती है। आज गरीबी –अमीरी का फर्क समाज में कम देखने को मिलता है। समाज में छुआछूत जैसी भयानक बीमारी का उपचार किया था। जो समाज को गहरे गर्त में ले गयी थी। स्वामी सरस्वती जी ने समाज में विधवा विवाह जैसी कुरुतीय कुप्रथा को नष्ट करने की समाज को प्रदान की जिसका वर्तमान में अच्छा प्रभाव व परिणाम देखने को मिल रहा है। और सरकारी व गैरसरकारी कार्यरत व्यक्ति का अवकाश का सदुपयोग में लेने की प्रेरणा अपने शिक्षण में प्रदान की जिससे आज व्यक्ति अवकाश का पूर्व अनुमान कर कार्य को पूरा करता है और युवा वर्ग से विशेष कर उन्होंने शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करने की शिक्षा दी। जिससे आज युवा वर्ग उनसे प्रेरित होकर समाज में नये आयामों को छू रहा है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हमें अभी भी इन महापुरूषों की प्रेरणाओं से समाज में चार चाँद लगाने है। जिससे हमारा स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र होगा। हमारा देश फिर से एक बार जरूर विश्व गुरु बनेगा। क्योंकि भारत पहले भी विश्व गुरु रहा है और भविष्य में विश्वगुरु रहेगा। स्वामी दयानन्द स्वरस्वती जी ने कहा भी था कि' वेदों की ओर लौटो'। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान् विचारक थे। उन्होने अपनी शिक्षा योजना, गम्भीरता पूर्वक चिन्तन, मनन के फलस्वरूप बनाई। उन्होंने संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म और वैदिक शिक्षा के पुनरूत्थान में लगा दिया तथा उनकी बराबर यह चेष्ठा रही कि वैदिक शिक्षा सर्वसाधारण को उपलब्ध हो तथा भविष्य में एक कुशल नागरिक बनाया जा सके। उनके शैक्षिक दर्शन से वर्तमान शिक्षा में बहुत प्रभाव पडे है जिससे बालक को भविष्य के लिये एक कुशल नागरिक बनाया जा सकता है। जिससे उसका सामाजिक, चारित्रिक तथा नैतिक विकास किया जा सके।

सन्दर्भ सूची–

- एन आर सक्सैना,के.पी. पाण्डेय (2017), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्र, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- एन आर सक्सैना (2015), डा. शिखा चतुर्वेदी, उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- बृज भूषण शर्मा (2010), शैक्षिक समाज विज्ञान, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मेरठ
- प्रो. रमन बिहारी लाल (2001), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्र के सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- डॉ. बैद्यनाथ प्रसादवर्मा (2004), विश्व के महान शिक्षा शास्त्री बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी (पटना)
- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो मेरठ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

- गुप्ता, एस. पी. (1999) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तकभवन, इलाहाबाद।
- लाल, रमन बिहारी (2007) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्री सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- कुलकर्णी, शरद अनन्त (2009) द्वितीय संस्करण ,"गांधी जी एवं विवेकानन्द जी के विचार दर्शन", खण्ड–4, सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली।
- माथुर, एस0 एस0 (2011) "गांधी जी के शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर0 ए0 (2009) "तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, मूल्य मीमांसा एवं शिक्षा", सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- त्रिपाठी, लालबचन (2006) "मनोवैज्ञानिक अनुसंधान विधियाँ", ,एच0 पी0 भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा।